पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

अन्तरा शब्दशक्ति
प्रकाशन एवं बहुउद्देशीय संस्था
www.antrashabdshakti.com

शब्द
से संवेदना तक...
लेखन से
परिवर्तन तक...

हिन्दी
हमारी पहचान
हमारी शक्ति

'समसामयिक प्रश्नों पर आपकी कलम'

(लेख प्रतियोगिता)

विचार...
चिंतन...
संवाद...
और
एक बेहतर
कल की ओर...

समाज
विकास
शिक्षा
पर्यावरण
युवा
मूल्य
राजनीति
महिला
संस्कृति
समाधान

समाज
साहित्य
संस्कृति
विकास
नई पीढ़ी
बेहतर कल

विचारों की
स्याही से
बदलता समाज...

रचनाकार :-
लीना शर्मा

आयोजक:-
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी (म.प्र.)

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

अन्तरा शब्दशक्ति

प्रकाशन एवं बहुददेशीय संस्था
www.antrashabdshakti.com

कलम की शक्ति, समाज की दिशा

हिन्दी हमारी पहचान हमारी शक्ति

शब्द से संवेदन तक...
लेखन से परिवर्तन तक...

संपादक : डॉ. प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक : Webcoodee.com
मुख्य कार्यालय : 15 नेहरू चौक, वारासिवनी,
जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331

Antrashabdshaktiprakashan

संपर्क : 9009423393
ईमेल : antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाइट : www.antrashabdshakti.com

वैधानिक सूचना

पुस्तक में प्रकाशित सभी रचनाएँ संबंधित रचनाकारों की मौलिक अभिव्यक्तियाँ हैं। प्रत्येक रचना में व्यक्त विचार, कथ्य एवं अभिमत के लिए संबंधित रचनाकार स्वयं उतरदायी हैं। रचनाओं के चयन एवं प्रकाशन का उद्देश्य साहित्यिक अभिव्यक्ति को मंच प्रदान करना एवं हिन्दी लेखन को प्रोत्साहित करना हैं।

हिन्दी से ही है पहचान...

विचार...
संवाद...
समाज...
और एक बैहतर कल...

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन, वारासिवनी (म.प्र.)

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
प्रकाशन एवं बहुद्देशीय संस्था

लेख प्रतियोगिता

लेखक/लेखिका - लीना शर्मा

बदलती सोच

मेरे विचार से वर्तमान की विकराल समस्या यह है कि आज के समाज की सोच बहुत बदलने लगी है और इसी के बीच आदमी के रहन-सहन और बोलचाल तरीके से ही उसको सभ्य और असभ्य की श्रेणी में खडा कर दिया जाता है ।आज के परिवेश में सभ्य व्यक्ति और असभ्य व्यक्ति के बीच अंतर अपने विचार आलेख के माध्यम से रख रही हूँ।

सभ्य यानी.....व्यक्ति के सामाजिक और भौतिक होने की अवस्था
मानव आदि काल में जंगल में बगैर किसी सुख-सुविधा के जीवनयापन करता था फिर गुफाओं में रहने लगा शरीर ढकने के लिए पत्तियों और वृक्षों के छालों का उपयोग करने लगा
कहते हैं ना....आवश्यकता आविष्कार की जननी है तदुपरांत मानव गुफाओं, कंदराओं से निकलकर,,अपने मस्तिष्क और मेहनत के बल पर.....छप्पन भोग और आज गगनचुंबी इमारतों की तो क्या बिसात अब तो मंगल और चांद पर भी बसने की सोच रहे हैं
इसी बदलाव के साथ साथ जन्म लेता रहा सभ्य समाज का होना
यानी.....शिष्टाचार युक्त और भला मानस
मानव जीवन की सभी अवस्थाएं...
1..बालपन
2...किशोरावस्था
3...युवा
4..प्रौढ़ अवस्था
जीवन के इन चारों पड़ाव को पार करते वक्त भी या यूँ कहो कि जीवन के हर उम्र में हमारे सभ्य होने को भी अलग-अलग दायरों में बांध दिया गया है
जब हम छोटे होते हैं तो..
खान पान का तरीका
बड़ों के साथ बातचीत का तरीका
विद्यालय में एक अच्छा विद्यार्थी और अंग्रेजी में माध्यम में अगर बालक पढ़ ले और उसे अच्छी अंग्रेजी पटपट करनी आती है तो क्या कहने सोने पर सुहागा फिर किसी अच्छी कॉलेज में चयन होने के बाद कुछ सालों बाद
मल्टीनेशनल कंपनी में प्रतिष्ठित पद पर लेना है सभ्य होने के दायरे आ रहा है।

इस सब के साथ हमारा बोलने चलने का तरीका हमारे कपड़े पहनने का तरीका हमारे घरों में साजु सज्जा युक्त सामान होना भी समाज में सभी सभ्य होने की श्रेणी में ही आता है.।

अच्छा मजेदार बात तो यह है जो व्यक्ति साधारण वेशभूषा में रहता है, ब्रांडेड कपड़े नहीं पहनते, क्षेत्रीय भाषा का इस्तेमाल बातचीत में करता है, हाथ मिलाने के बदले हाथ जोड़ अभिवादन करता है और बड़ों के पांव छूता है

किसी सामाजिक संस्था से जुड़ा रहता है और समय-समय पर अपनी सहभागिता भी देता है डिस्को बैंकबैलेंस कम हो उसके पास बड़ी-बड़ी गाड़ियां ना हो और सबसे बड़ी बात सोशल मीडिया का इस्तेमाल ना के बराबर करता है तो आज के समय में वही व्यक्ति सबसे ज्यादा असभ्य की श्रेणी में ही माना जाताहै आज के सभ्य समाज का कटु सत्य है यह....

हमारे जमाने में तो...

१. घर के सभी बच्चे मेहमानों वाली बैठक में ना जाकर अलग कमरे में बैठ उसी नाश्ते का मजा ले और मेहमानों के प्लेट में से ना उठाएं यह भी सभ्य बालक की श्रेणी में आता था ही थी😊

२..स्कूल में शिक्षक शिक्षिकाओं का अभिवादन करना, साफ-सुथरे कपड़े पहनना, जूते पॉलिश होना नाखून कटे होना बालों में रिबन लगा होना, गृह कार्य पूर्ण होना और कॉपी किताबों पर बांस पेपर का कवर लगा होना भी सभ्य होने का हिस्सा था 😊

३...हमारे माता पिता जो कि दोनों ही सरकारी नौकरियों में कार्यरत रहे हैं उनका बगैर किसी भ्रष्टाचार के सम्मान के साथ अपनी नौकरियां करना समाज में एक इज्जत पाना भी सभ्य के दायरे में ही था।

४..मेरी दादी मां का सामाजिक कार्यों में संलग्न रहना, जरूरतमंदों की मदद करना, अपने पूरे परिवार को एकजुट कर रखना भी सभ्य समाज के दायरे में ही था....

माना कि आज समाज के बदलाव के साथ सभ्य होने के दायरे में बदल चुके हैं.....

परंतु क्या करें परिवर्तन प्रकृति का नियम है इसको भी समझना पड़ेगा।

- लीना शर्मा

लेखक परिचय

नाम – लीना शर्मा

ग्राम - कोटा (राजस्थान)

अन्तरा शब्दशक्ति
प्रकाशन

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
प्रकाशन एवं बहुद्देशीय संस्था

कलम की शक्ति, समाज की दिशा

सम्मान-पत्र

यह प्रमाणित किया जाता है कि

आ.....**लीना शर्मा**.....जी

ने हिन्दी पखवाड़े के अवसर पर आयोजित "**एक लेख प्रतियोगिता**" में उत्साहपूर्वक सहभागिता करते हुए **समसामयिक विषय पर अपने विचारों को** प्रभावी एवं सार्थक ढंग से अभिव्यक्त किया।

उनकी साहित्यिक **अभिव्यक्ति** एवं रचनात्मक सहभागिता की सराहना करते हुए **अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन** की ओर से यह **सम्मान-पत्र** सादर प्रदान किया जाता है।

आपकी सृजनशीलता एवं साहित्यिक यात्रा के उज्ज्वल भविष्य की हार्दिक शुभकामनाएँ।

हिन्दी विचारों को विस्तार देती है... समाज को जोड़ती है...

हिंदी
हमारी पहचान...
हमारी शक्ति...

प्रीति सुराना
समकित सुराना

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन एवं संस्था
डॉ. प्रीति समकित सुराना

शब्द से संवेदन तक... लेखन से परिवर्तन तक...